व्यवहार और निश्चय

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

संसार में सर्वत्र द्वैत दिखलाई देता है। रात–दिन, नर–नारी, माता–पिता, सम्मान–तिरष्कार, निर्गुण–सगुण, जड़–चेतन सर्वत्र द्वैत है। इस संसार में असंख्य विरोधी स्वभाव एक साथ रहते हैं। बिना विरोध के आगे नहीं बढ़ा जा सकता। प्रजातंत्रात्मक व्यवस्था में पक्ष और विपक्ष का होना जरूरी है। बिना विपक्ष के तानाशाही बढ़ सकती है। मनुष्य का शरीर सात खरब कोशिकाओं से संचालित होता है। कोशिकाएं शरीर से खुराक ग्रहण करती है और सक्रिय रहती हैं। शरीर में दर्द को दूर करने के लिए दर्द की दवा खानी पड़ती है। दवा खाने से दर्द दूर हो जाता है। संसार में जहां एक–दूसरे से विरोध दिखलाई देता है वहीं शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व भी दिखलाई पड़ता है। यह जगत् व्यवहार और निश्चय से बना है। व्यवहार भीतरी जगत् है। पूर्वजन्म के कर्मों के भुगतान के लिए यह शरीर प्राप्त हुआ है।

प्रत्येक वस्तु के अनेक विरोधी धर्म प्रतीत होते है। अपेक्षा के बिना उनका विवेचन नहीं किया जा सकता। द्रव्य को जानते समय सम्पूर्ण रूप से उसको जान लिया जाता है किन्तु उससे व्यवहार नहीं चलता। हमारी सहज अपेक्षाएं भी ऐसी होती है कि जैसे विटामीन डी की कमी वाला व्यक्ति सूर्य का ताप लेता है तो वह उदय होते हुए सूर्य का ही लेगा। अपेक्षा हमारा बुद्धिगत धर्म है। वह भेद से उत्पन्न होता है। भेद मुख्यतः चार होते हैं– वस्तु भेद, क्षेत्र भेद, काल भेद, अवस्था भेद। वस्तु न नित्य है न अनित्य, किन्तु नित्य अनित्य का समन्वय है। नय के द्वारा वस्तु का आंशिक ज्ञान होता है पूर्ण ज्ञान नहीं। नय सापेक्ष होता है, इसलिए इसके दो रूप बन जाते है– जहां पर्याय गौण और द्रव्य मुख्य होता है वह द्रव्यार्थिक नय है, जहां द्रव्य गौण और पर्याय मुख्य होता है वह पर्यायार्थिक नय है। वास्तविक दृष्टि को मुख्य मानने वाला अभिप्राय निश्चनय कहलाता है और लौकिक दृष्टि को मुख्य मानने वाला अभिप्राय व्यवहारनय कहलाता है।

निश्चयनय सात प्रकार का होता है। व्यवहारनय को उपनय भी कहा जाता है, व्यवहार उपचरित है। अच्छा मेघ बरसता है, तब कहा जाता है अनाज बरस रहा है। यहां कारण में कार्य का उपचार है। मेघ तो अनाज का कारण है। उसे अपेक्षावश फसल उत्पादक वृष्टि की अनुकूलता बताने के लिए अनाज कहा जा रहा है। यह उचित है किन्तु उसे अनाज ही समझ लिया जाये यह ठीक नहीं। व्यवहार की बात को निश्चय की दृष्टि से देखा जाये, वहां वह मिथ्या बन जाता है। अपनी मर्यादा में यह सत्य है। सत्य का साक्षात् होने के पूर्व सत्य की व्याख्या होनी चाहिए। एक सत्य के अनेक रूप होते हैं। अनेक रूपों की एकता और एक की अनेक रूपता ही सत्य है। उसकी व्याख्या का जो साधन है वही नय है। सत्य एक और अनेक भाव का अविभक्त रूप है, इसलिए उसकी व्याख्या करने वाले नय भी परस्पर सापेक्ष है।

सत्य की व्याख्या द्रव्य क्षेत्र काल और भाव की अपेक्षा से होती है। एक के लिए जो गुरु है वही दूसरों के लिए लघु। एक के लिए जो दूर है वही दूसरे के लिए निकट। एक के लिए जो उर्ध्व है वहीं दूसरे के लिए निम्न। अपेक्षा के बिना इसकी व्याख्या नहीं हो सकती। कोई पदार्थ अनन्त गुणों का सामंजस्य है। उसके सभी गुण अपेक्षा की श्रृंखला में गूथे हुए हैं। चेतन पदार्थ चैतन्य गुण की अपेक्षा से चेतन है। किन्तु उसके सहभावी अस्तित्व, वस्तुत्व आदि गुणों की अपेक्षा से चेतन पदार्थ की चेतनशीलता नहीं है। अनन्त शक्तियों और उनके अनन्त कार्य की जो एक संकलना, समन्वय या श्रृंखला है, वही पदार्थ है इसलिए विविध शक्तियों और तज्जनित परिणामों को अविरोध भाव सापेक्ष स्थिति में ही हो सकता है। कोई भी व्यक्ति पदार्थ को एक ही दृष्टि से नहीं देखता। वक्ता का झुकाव पदार्थ की ओर होगा तो उसकी वाणी का आकर्षण भी उसी की ओर होगा। यही बात पदार्थ की अवस्था के विषय में है।

नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, समभिरूढ़ और एवम्भूत ये सात नय है। नैगमनय में तादात्म्य की अपेक्षा से सामान्य विशेष की भिन्नता का समर्थन किया जाता है। सामान्य विशेष पदार्थ का ज्ञान प्रमाण से होता है। अखण्ड वस्तु प्रमाण का विषय है। नय का विषय उसका एकांश है। अभेद और भेद में तादात्म्य संबंध है। संबंध दो वस्तुओं से होता है। केवल भेद या केवल अभेद में कोई संबंध नहीं होता। चैतन्य गुण जैसे चेतन व्यक्तियों में सामंजस्य स्थापित करता

है वैसे ही यदि यही गुण अचेतन व्यक्तियों का चेतन व्यक्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित करता तो चैतन्य धर्म की अपेक्षा चेतन और अचेतन को अत्यंत विरोधी मानने की स्थिति नहीं आती।

संग्रह और व्यवहार ये दोनों क्रमशः अभेद और भेद को मुख्य मानकर चलते हैं। ऋजुसूत्र वर्तमानपरक दृष्टि है यह अतीत और भविष्य की सत्ता स्वीकार नहीं करती। अतीत की क्रिया नष्ट हो चुकी है। भविष्य की क्रिया प्रारम्भ नहीं हो सकी है, इसलिए भूतकालीन वस्तु और भविष्यकालीन वस्तु न तो अर्थक्रिया समर्थ है और न ही प्रमाण का विषय है। व्यवहार और निश्चय वस्तु सत्य को बतलाने के लिए हैं।